INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(1): 38-41
Received: 01-01-2022
Accepted: 05-02-2022

मोनिका रानी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ, राजस्थान, भारत

डॉ. राजेंद्र कुमार
शोध निर्देशक, सह आचार्य, इतिहास विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
मोनिका रानी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ, राजस्थान, भारत

कीर्ति किसान पार्टी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

मोनिका रानी, डॉ. राजेंद्र कुमार

सारांश
किसी भी आंदोलन की शक्ति एवं उसके आवश्यक तत्व जो स्थानीय माहौल में मौजूद रहते हैं। परंतु कई बार यह तत्व लंबे समय तक हमें दिखाई नहीं देते अर्थात यह तत्व सुप्त अवस्था में कहीं ना कहीं पड़े होते हैं। जिनमें आंदोलन के बीज समाहित होते हैं, जब इस प्रकार के तत्वों को कोई पथ-प्रदर्शक या प्रेरणा मिलती है, तो इस प्रकार के तत्व किसी बड़े आंदोलन या क्रांति को जन्म देते हैं। आज तक विश्व में जितने भी बड़े आंदोलन या क्रांतियां हुई है, यह सब इस प्रकार की परिस्थितियों की ओर इशारा करती है। ऐसा ही कुछ भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान घटित हुआ लंबे समय भारत की आम जनता जिसमें किसान और मजदूर वर्ग के लोग जो आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक बदहाली व शोषण के शिकार हो रहे थे। जब ये लोग बाहरी शक्तियों के संपर्क में आए और बाहरी शक्तियों के संपर्क में आने के कारण एक महान आंदोलन का मार्ग प्रशस्त हुआ। एक विचारधारा, कौमी एकता, जागृति और अंत में एक बदलाव जिसने बड़े स्तर पर भारतीयों के जीवन परिवर्तन करने में अहम भूमिका अदा की और भारत की स्वतंत्रता का पथ प्रदर्शक बना। 19वीं शताब्दी के मध्य भारत में राष्ट्रवाद के स्वाद का अनुभव होने लगा था। क्षेत्रीय स्तर पर चल रहे छोटे-छोटे आंदोलनों ने मिलकर भारत के लिए स्वतंत्रता संग्राम का मार्ग प्रशस्त किया।

कुटशब्द: आंदोलन, स्वतंत्रता, किसान, मजदूरतत्व

प्रस्तावना
भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के पंजाब में कीर्ति किसान पार्टी ने किसानों और मजदूरों को संगठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया इस पार्टी ने ना केवल उग्रराष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ बल्कि पूंजीवादियों के खिलाफ भी मजदूरों और किसानों को संगठित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कीर्ति किसान पार्टी के गठन में 1917 ईस्वी की रूसी क्रांति, महात्मा गांधी की स्वराज्य प्राप्त की नीति और पंजाब की आर्थिक सामाजिक स्थिति ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस पार्टी में ज्यादातर सदस्य किसान, मजदूर तथा निम्न वर्ग के थे।

ये हिंसा में विश्वास रखते थे तथा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समानता में विश्वास रखते थे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इस कीर्ति किसान पार्टी का योगदान कम नहीं आंका जा सकता। भारत के कई क्षेत्रों में साम्यवादियों का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा था। यह वह समय था, जब पंजाब भी साम्यवादियों के प्रभाव से अछूता नहीं था। रूस में साम्यवादी क्रांति अपने पैर पसार चुकी थी और अफगानिस्तान से भी कई मुस्लिम नेता साम्यवादी विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए पेशावर आ रहे थे, तो इन साम्यवादी विचारों को रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया। उधर मुंबई में भी एस.ए.डांग ने 'द सोशलिस्ट' नामक एक अखबार का संपादन किया। लाहौर में भी उर्दू में 'इंकलाब' नामक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। साम्यवादियों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए ब्रिटिश सरकार चिंतित हो गई। एम.एन. राय साम्यवादियों का एक नेता जिसने भारत में मजदूर और किसान पार्टी बनाने में अपना अहम योगदान दिया।[1]ब्रिटिश सरकार ने साम्यावादियों के प्रभाव को दबाने की कोशिश की परंतु असफल रहे। पंजाब में कुछ नेताओं जैसे सोहन सिंह भकना, केदारनाथ सहगल, एम.ए मजीद और इंग्लैंड की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता फिलिप्स स्पराट 12 अप्रैल 1927 ईस्वी को अमृतसर में इकट्ठे हुए तथा यहीं पर इन्होंने मजदूर किसान संघ कीर्ति-किसान पार्टी की स्थापना की। इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य किसानों और मजदूरों को संगठित करके ब्रिटिश राज से पूरी तरह स्वतंत्र करवाना।मजदूरों और किसानों को आर्थिक,राजनीतिक और सामाजिक गुलामी से आजाद करवाना तथा भारत में समाजवाद की स्थापना करना मुख्य उद्देश्य था। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कीर्ति-किसान पार्टी मजदूर संघ और अखिल भारतीय किसान संगठन के साथ मिलकर काम करेगी। 18 वर्ष की आयु के पुरुष या स्त्री इसके सदस्य बन सकते थे।[2] कीर्ति किसान पार्टी से पंजाब में उग्र राष्ट्रवाद को एक नई दिशा मिली। इस पार्टी ने ना सिर्फ साम्राज्यवाद के खिलाफ बल्कि पूंजीवादियों के खिलाफ भी मजदूरों और किसानों को संगठित किया। सिर्फ मजदूर और किसान ही नहीं आम जनता भी इस कीर्ति किसान पार्टी का हिस्सा थी। कीर्ति किसान पार्टी ने श्रमिकों किसानों तथा बुद्धिजीवी वर्ग में मार्क्सवादी विचारों का प्रसार करके एक नई जागरूकता पैदा की। इस पार्टी ने इन वर्गों को वर्ग संघर्ष के आधार पर तथा आर्थिक योजना के आधार पर एक किया। कीर्ति-किसान पार्टी के व्यवहारिक कार्य और किसानों की कुछ प्रगतिशील मांगों जैसे नजराना को खत्म करना, भू राजस्व को कम करना, जलकर और भी बहुत सारी ऐसी मांगों पर केंद्रित थी, इन मांगों के आधार पर यह एक शक्तिशाली किसान आंदोलन के रूप में एक सफल संगठन रहा।[3] इस प्रक्रिया में इसमें स्वतंत्रता संग्राम को मुकाम तक ले जाने में भी मदद की तथा कांग्रेस को गांव के क्षेत्र को समझने में मदद की। कीर्ति किसान पार्टी का एकमात्र उद्देश्य अखिल भारतीय किसान संघ और भारत के मजदूर यूनियन संघ के साथ मिलकर काम करना। पार्टी के संगठनकर्ता रूस की साम्यवादी क्रांति से बहुत प्रभावित थे। रूस की क्रांति की तर्ज पर यह पार्टी भारत में समाजवाद को स्थापित करना चाहती थी तथा उन्होंने पार्टी को वैसे ही उद्देश्य प्राप्त करने के लिए बनाया। उन्होंने लोगों को उनके दुखों से अवगत करवाया और उनमें चेतना और जागरूकता पैदा की।[4] कीर्ति किसान पार्टी किसान और भूमिहीन श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करती है। वस्तुतः कीर्ति शब्द का अर्थ है- 'मेहनती'और पार्टी इसकी व्याख्या करती है, एक ऐसा व्यक्ति जो अपना काम हाथ से करता है और दूसरों का शोषण नहीं करता।[5]यद्यपि इस पार्टी के उद्भव के बहुत सारे कारक है। सबसे महत्वपूर्ण योगदान सामाजिक और साम्यवादी विचारधारा का पंजाब में गदर पार्टी के नेताओं के द्वारा प्रसार जिनको पुनः अभिविन्यास को भोगना पड़ा और उन्होंने भारत में साम्राज्यवादी संघर्ष के भाग्य को बीसवीं सदी के विश्व श्रमिक वर्ग के क्रांतिकारी आंदोलन से जोड़ा।[6]रूसी क्रांति से पहले समाजवाद केवल एक विचारधारा थी,परंतु रूस में समाजवादी क्रांति की सफलता संसार के दलित लोगों को मुक्ति की प्रेरणा के लिए एक नए रूस की ओर ले कर गई। रूसी क्रांति की सफलता ने

कीर्ति किसान पार्टी को एक नया आयाम प्रदान किया।[7] इस पार्टी के मुख्य नेता सोहन सिंह भकना अपने जोशीले भाषण में यही कहते थे, कि पहली क्रांति अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने पर आएगी और दूसरी क्रांति सामाजिक क्रांति के बाद आएगी। एम.ए. मजीद ने 'मेहनतकश' नामक एक जनरल प्रकाशित किया जिसमें कई तरह के लेख छापे जाते थे, जिससे जनता में जागरूकता। उनके लेखों में 'भारत में क्रांति'और 'आजादी केवल हथियारों के दम पर ली जा सकती है'आदि महत्वपूर्ण थे, परंतु ब्रिटिश सरकार द्वारा 6 महीने के अंदर ही अंदर इन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।[8] पार्टी के नेताओं ने सबसे पहले जनता को यह बताने का निश्चय किया कि क्यों तथा किसके लिए पार्टी जरूरी है। इसके संगठनकर्ता रूसी क्रांति से प्रभावित थे।यह पार्टी पंजाब के अन्य संगठनों जैसे नौजवान भारत सभा तथा हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के साथ मिलकर मेहनतकश लोगों को संगठित करना चाहती थी।नौजवान भारत सभा की स्थापना 12 अप्रैल 1928 को जलियांवाला बाग में एक सम्मेलन में की गई थी। नौजवान सभा का प्रथम लक्ष्य मजदूरों किसानों को संगठित करना, पूरे भारत में मजदूरों और किसानों का एक संपूर्ण स्वतंत्र राज्य स्थापित करना 2.अखंड भारतीय राष्ट्र की स्थापना के लिए देश के युवाओं के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाना 3. आर्थिक औद्योगिक और सामाजिक आंदोलन के साथ सहानुभूति व्यक्त करना और उसकी सहायता करना,जो सांप्रदायिक भावना से मुक्त होते हुए भी हमें हमारे आदर्श अर्थात मजदूरों और किसानों को संगठित करने के लिए मजदूरों और किसानों के पूर्ण स्वतंत्र राज्य की स्थापना के निकट ले जाने का इरादा रखते हैं।नौजवान सभा और कीर्ति किसान पार्टी के उद्देश्य में समानता थी। कीर्ति किसान पार्टी भी पंजाब में मजदूरों और किसानों को इकट्ठा करने वाला पार्टी थी। इस पार्टी ने किसानों का और मजदूरों का नेतृत्व करते हुए उन्हें एक मंच पर संगठित किया तथा उनके अधिकारों के लिए संघर्ष किया। कीर्ति किसान पार्टी ने सितंबर 1928 और मार्च 1929 ईस्वी में कांग्रेस द्वारा क्रमश: लायलपुर और रोहतक में प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलनों के साथ-साथ अपने सम्मेलन भी आयोजित किए।[9] इस प्रकार नए वामपंथी संगठनों के निर्माण के साथ- जुलाई 1933 ईस्वी में होशियारपुर में एक कीर्ति किसान लीग का गठन किया गया और सितंबर तक कीर्ति किसान लीग की 4 शाखाएं खुल गई। कीर्ति किसान सभा ने 3 और 4 सितंबर को जिले के वार्षिक छप्पर मेले में एक सम्मेलन आयोजित किया, जहां हमेशा की तरह जमींदार और सरकार के खिलाफ लोगों में जागरूकता उत्पन्न की। इसी तरह अमृतसर में कीर्ति किसान सभा ने अगस्त में तरनतारन में एक बैठक की जिसमें 1000 से अधिक किसानों को संगठित किया।[10]कीर्ति किसान पार्टी के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर अंग्रेजी सरकार ने अक्टूबर तक कीर्ति किसान समूह के चार प्रमुख सदस्यों को गिरफ्तार करने का आदेश जारी कर दिया।नवंबर, 1933 ईस्वी में प्रांत के दो प्रमुख कम्युनिस्ट नेता सोहन सिंह जोश और अब्दुल मजीद, जो मेरठ षड्यंत्र मामले में अपनी शर्तों की सेवा कर रहे थे, को रिहा कर दिया। सोहन सिंह जोश,जो पहले पंजाब में कम्युनिस्ट आंदोलन के प्रमुख आयोजक थे और एनजेबीएस, कीर्ति अखबार और कीर्ति समूह में सक्रिय थे, अब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नायक के रूप में उभरे। अपनी रिहाई के बाद उन्होंने सीपीआई के पीछे प्रांत की वामपंथी ताकतों को संगठित करना शुरू कर दिया तथा साम्राज्यवाद विरोधी लीग की स्थापना की। साम्राज्यवाद विरोधी लीग के दायरे में उन्होंने किसान संगठनों सहित विभिन्न व्यक्तियों, समूहो और संगठनों को एक साथ लाने की कोशिश की।[11] साथ ही नौजवान भारत सभा और कीर्ति किसान पार्टी तथा अन्य दो प्रमुख वामपंथी समूह अपने मतभेदों को सुलझाने और उन सबके बीच एक संयोजन बनाने की कोशिश कर रहे थे और अन्य मौजूदा संगठन को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने और अलग-अलग क्षेत्रों में वामपंथी गतिविधियों को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहे थे।[12]इस प्रकार वामपंथी प्रभाव को बढ़ाकर उभरती हुई वामपंथी प्रवृत्ति ने एक ऐसा माहौल तैयार किया जो किसानों की अपनी

मांगों के लिए और अपने स्वयं के संगठनों के लिए अनुकूल था। इस प्रकार कालांतर में यही प्रवृत्ति पंजाब में किसान आंदोलनों के सबसे शक्तिशाली और सक्रिय संगठन के रूप में उभरी। संगठनात्मक ढांचे के विस्तार और सुधार की प्रक्रिया के साथ-साथ वामपंथी संगठन की शुरुआत से किसानों के बीच गतिविधियों को और अधिक तेज कर दिया था। उनकी गतिविधि बैठकों और सम्मेलनों के रूप मे विशेष रुप से अमृतसर, गुरदासपुर और होशियारपुर जिलों में और कुछ हद तक लाहौर,लुधियाना और शेखुपुरा में थी। अमृतसर जिला जो इस अवधि के दौरान एक ठोस अभियान का केंद्र बन गया था। अमृतसर जिला किसान सभा जो पंजाब कीर्ति किसान सभा द्वारा संचालित थी ने पहले ही दो सम्मेलनों का आयोजन किया था।अमृतसर जिला किसान सभा ने सम्मेलन के माध्यम से लगातार 14 दिन 14 विभिन्न गांव में 14 बैठकें आयोजित की।इसके बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए सितंबर 1934 ईस्वी में कीर्ति किसान पार्टी को अवैध घोषित कर दिया गया परंतु तब तक पंजाब के मजदूर और किसान एक हो चुके थे और बाद में कांग्रेस सरकार ने भी कीर्ति किसान पार्टी का समर्थन किया।[13] इस प्रकार किसानों और मजदूरों का यह आंदोलन 1939 ईस्वी तक चलता रहा,जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मेंअपनी महती भूमिका निभाई, उनके स्वतंत्रता संग्राम में इस योगदान को कम नहीं आंका जा सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सोनू कपिला पंजाब का राजनीतिक और आर्थिक इतिहास पृष्ठ संख्या 164
2. वही पृष्ठ-164
3. जे.एस.बराड़, द कम्युनिस्ट पार्टी इन पंजाब, पृष्ठ-28-29
4. वही पृष्ठ-30
5. कीर्ति, अप्रैल 1926,9
6. मास्टर हरि सिंह, पंजाब पीजेंट एंड फ्रीडम स्ट्रगल, पृ.163-164
7. आर.ए.उलयानोवशके.द कोमिंटर्न एंड द ईस्ट, पृष्ठ-6
8. सोनू कपिला पंजाब का राजनीतिक और आर्थिक इतिहास पृष्ठ-164-165
9. मृदुला मुखर्जी पृष्ठ सं 45
10. वहीं पृष्ठ सं 46
11. वही पृष्ठ सं 47
12. सोनू कपिला पंजाब का राजनीतिक और आर्थिक इतिहास पृष्ठ संख्या 164-65